

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

20-जुलाई-2015 17:38 IST

**भारतीय श्रम सम्मलेन के 46वें सत्र के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री जी के भाषण का मूल पाठ**

केंद्र और राज्य के भिन्न-भिन्न सरकारों के प्रतिनिधि बंधु गण,

ये भारत की श्रम-संसद है और एक लंबे अरसे से हमारे देश में त्रिपक्षीय वार्ता का सिलसिला चला है। एक प्रकार से ये त्रिपक्षीय वार्ता के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। ये अपने आप में एक उज्ज्वल इतिहास है कि 75 साल का हमारे पास एक गहरा अनुभव है। उद्योग जगत सरकार एवं श्रम संगठन गत 75 वर्ष से लगातार बैठ करके विचार-विमर्श करके मत भिन्नताओं के बीच भी मंथन करके अमृत निकालने का प्रयास करते रहे हैं। और उसी संजीवनी से देश को आगे बढ़ाने की कोशिश करते रहे हैं और उसी कड़ी में आज यह श्रम संसद हो रहा है। हम सबके लिए प्रेरणा की बात है कि यह वो समारोह है जहां कभी बाबा साहेब अंबेडकर का मार्ग दर्शन मिला था। यह वो समारोह है जिसे कभी भारत के भूत-पूर्व राष्ट्रपति श्रीमान वीवी गिरि जी का मार्ग दर्शन मिला था। अनेक महानुभावों के पद चिन्हों पर चलते-चलते आज हम यहां पहुंचे हैं। समय का अपना एक प्रभाव होता है। आज से 70-75 साल पहले जिन बिंदुओं पर विचार करने की जरूरत होती थी वो आज जरूरत नहीं होगी और आज जिन बिंदुओं पर विचार करने की आवश्यकता है हो सकता है 25 साल बाद वह भी काल बाह्य हो जाए, क्योंकि एक जीवंत व्यवस्था का यह लक्षण होता है, नित्य नूतन, नित्य परिवर्तनशील और अच्छे लक्षण की पूर्ति के लिए एकत्र होकर आगे बढ़ना है। इस बात में कोई दुविधा नहीं है। इस बात में कोई मत-मतांतर नहीं है कि राष्ट्र के निर्माण में श्रमिक का कितना बड़ा योगदान होता है, चाहे वो किसान हो मजदूर हो, वो unorganized लेबर का हिस्सा हो, और हमारे यहां तो सदियों से इन सबको एक शब्द से जाना जाता है- विश्वकर्मा। विश्वकर्मा के रूप में जिसको जाना जाता है, माना जाता है और इसलिए अगर श्रमिक रहेगा दुखी, तो देश कैसे होगा सुखी? और मैं नहीं मानता हूं कि इन मूलभूत बातों में हममें से किसी में कोई मतभेद है। मैं श्रम को एक महायज्ञ मानता हूं जिसमें कोटि अवधि लोग अपनी आहुति देते हैं। सिर्फ श्रम की नहीं, कभी-कभार तो सपनों की भी आहुति देते हैं और तब जा करके किसी ओर के सपने संजोए जा सकते हैं। अगर एक श्रमिक अपने सपनों को आहुत न करता तो किसी दूसरे के सपने कभी संजोए नहीं जा सकते। इतना बड़ा योगदान समाज के इस तबके का है और इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए हमने आगे किस दिशा में जाना है उस पर हमें आगे सोचना होगा। जब तक श्रमिक, मालिक- उनके बीच परिवार भाव पैदा नहीं होता है, अपनेपन का भाव पैदा नहीं होता है। मालिक अगर यह सोचता है कि वो किसी का पेट भरता है और श्रमिक यह सोचता है कि मेरे पसीने से ही तुम्हारी दुनिया चलती है तो मैं नहीं समझता कि कारोबार ठीक से चलेगा। लेकिन अगर परिवार भाव हो, एक श्रमिक का दुख मालिक को रात को बैचैन बना देता हो, और फैक्टरी का हुआ कोई नुकसान श्रमिक को रात को सोने न देता हो, यह परिवार भाव जब पैदा होता है तब विकास की यात्रा को कोई रोक नहीं सकता। और यह जिम्मेवारी जब हम निभाएंगे तब जाकर के, मैं तो चाहूंगा कभी यह भी सोचा जा सकता है क्या। इन सारी चर्चाओं का कभी वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन होने की आवश्यकता है। ऐसे बड़े उद्योग और ऐसे छोटे उद्योग या मध्यम दर्जे के उद्योग 50 साल पुराने हैं, लेकिन कभी हड़ताल नहीं हुई है क्या कारण होगा। उसको चलाने वाले लोगों की सोच क्या रही होगी। उन्होंने उनके साथ किस प्रकार से नाता जोड़ा है, क्या हम आज नए उद्योगकारों को, establish उद्योगकारों को, उनको यह नमूना दिखा सकते हैं कि हमारे सामने, हमारे ही देश में, इसी धरती में ये 50 उद्योग ऐसे हैं जो 50 साल से चल रहे हैं। हजारों की तादाद में श्रमिक है। लेकिन न कभी संघर्ष हुआ है, न कभी हड़ताल हुई है, न उनकी कोई शिकायत, न इनकी कोई शिकायत। एक मंगलम माहौल जिन-जिन इकाइयों में है, कभी उनको छांटकर निकालना चाहिए और उस मंगलम का कारण क्या है, इस मंगल अवस्था को प्राप्त करने के उनके तौर तरीके क्या है। अगर इन चीजों को हम श्रमिकों के सामने ले जाएंगे, इन चीजों को हम उद्योगकारों के सामने ले जाएंगे तो उनको भली-भांति समझा सकते हैं और मंगलम का माहौल जहां होगा, वहां यह भी नजर आया होगा कि सिर्फ श्रमिक का असंतोष है, ऐसा नहीं है। वहां यह भी ध्यान में आया होगा कि उस उद्योग का विकास भी उतना ही हुआ होगा और उन श्रमिकों का विकास भी उतना ही हुआ होगा। जब तक हम इस भावनात्मक अवस्था को आगे बढ़ाने की दिशा में प्रयास नहीं करते और जो सफल गाथाएं हैं और उन सफल गाथाओं को हम उजागर नहीं करते, मैं नहीं मानता हूं कि हम सिर्फ कानूनों के द्वारा बंधनों को लगाते-लगाते समस्याओं का समाधान कर पाएंगे। हां, कानून उनके लिए जरूरी है कि जो किसी चीज को मानने को तैयार नहीं होते, श्रमिक को इंसान भी मानने को तैयार नहीं होते। उनकी सुख-सुविधा की बात तो छोड़ दीजिए उसकी minimum आवश्यकताओं की ओर भी देखने को तैयार नहीं होते। ऐसे लोगों को कानूनों की उतनी ही जरूरत होती है और इसलिए हम इस व्यवस्था को उस रूप

में समझकर चलाएं। एक सामाजिक दृष्टि से भी हमारे यहां सोचने की बहुत आवश्यकता है। किसी न किसी कारण से हमारे भीतर एक बहुत बड़ी बुराई पनप गई है। हमारी सोच का हिस्सा बन गई है। हर चीज को देखने के हमारे तरीके की आदत सा बन गयी है और वो है हम कभी भी श्रम करने वाले के प्रति आदर के भाव से देखते ही नहीं। कोई बढ़िया कपड़े पहन करके हमारे दरवाजे की घंटी बजाए, दोपहर दो बजे हम आराम से सोए हों, कोट-पेंट सूट पहनकर आए और घंटी बजाए तो नींद खराब होगी ही होगी, दरवाजा खोलेंगे और जैसे ही उसको देखेंगे तो कहेंगे आइए आइए कहां से आए हैं, क्या काम था, बैठिए-बैठिए। और कोई ऑटो रिक्शा वाले ने घंटी बजाई, पता नहीं चलता है दोपहर दो बजे हम सोते हैं, इस समय घंटी बजा दी। क्यों भई यह फर्क क्यों?

यह जो हमारी सामाजिक जीवन की सबसे बड़ी कमी आई है सदियों के कारण आई हुई है। लेकिन कभी न कभी dignity of labour , श्रम की प्रतिष्ठा, श्रमिक का सम्मान ये समाज के नाते अगर हम स्वभाव नहीं बनाएंगे तो हम हमारे श्रमिकों के प्रति जो कि उसके बिना हमारी जिन्दगी नहीं है, अगर कोई धोबी बढ़िया सा iron नहीं करता तो मैं कुर्ता पहनकर कहां से आता यहां और इसलिए जिनके भरोसे हमारी जिन्दगी है उनके प्रति सम्मान का भाव यह सामाजिक चरित्र कैसे पैदा हो, उसके लिए हम किस प्रकार से व्यवस्थाओं को विकसित करें। हमारे बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में उस प्रकार के syllabus कैसे आए ताकि सहज रूप से आनी वाली पीढ़ियां हमारे श्रमिक के प्रति सम्मान के भाव से देखने लगे। आप देखिए माहौल अपने आप बदलना शुरू हो जाएगा। हमारी सरकार को सेवा करने का अवसर मिला है, श्रम संगठनों के साथ लगातार बातचीत चल रही है और त्रिपक्षीय बातचीत के आधार पर ही आगे बढ़ रहे हैं। कई पुरानी-पुरानी गुत्थियां हैं, सुलझानी है और मुझे विश्वास है कि देश के श्रमिकों के आशीर्वाद से इन गुत्थियों को सुलझाने में हम सफल होंगे और समस्याओं का समाधान करने में हम कोई न कोई रास्ते खोजते चलेंगे। और सहमति से कानूनों का भी परिवर्तन करना होगा। कानूनों में कोई कुछ जोड़ना होगा, कुछ निकालना होगा वो भी सहमति से करने का प्रयास, प्रयास करते ही रहना चाहिए और निरंतर प्रक्रिया चलती रही है, आगे भी चलती रहने वाली है। कोई भी सरकार आए, ये कोई आखिरी कार्यक्रम कभी होता नहीं है और इसलिए मैं समझता हूं कि इस प्रक्रिया का अपना महत्व है। मेरा विश्वास रहा है- 'minimum government , maximum governance' और इसलिए ये जो कानूनों के ढेर हैं कानूनों का ऐसा कहीं खो जाए इन्सान। पता नहीं इतने कानून बनाये कर रखे हुए और हरेक को अपने फायदे वाला कानून ढूंढ सकते हैं ऐसी स्थिति है। हर कोई उद्योगकार एक ही कानून में से उद्योगकार को अपने मतलब का कानून निकालना है तो वो भी निकाल सकता है सामाजिक संगठन को निकालना है तो वो भी निकाल सकता है, सरकार को निकालना है तो वो भी निकाल सकती है। क्योंकि टुकड़ों में सब चीजें चलती रही हैं। जब तक हम एक एकत्रित भाव से, composite भाव से, हमें जाना कहां है उसको ले करके , और इसीलिए मैंने एक कमेटी भी बनाई है के इन सबमें जो पुराने कानूनों को जरा देखरेख में सही कैसे किया जाए। और सच्चे अर्थ में जिनके लिए बनाए गए हैं कानून उनको लाभ हो रहा है या नहीं हो रहा। वरना कोई और जगह पर ऐसा कानून बनके बैठा हुआ है जो इसको आगे ही नहीं जाने देता। अब श्रमिक कहां लड़ेगा, कहां जाएगा। वो क्या कोर्ट कचहरी में इतने महंगे वकील रखेगा क्या। और इसलिए मेरा यहाँ आग्रह है और मैं ये कोशिश कर रहा हूं कि ये कानूनों का एक बहुत बड़ा जाल हो गया है उसका सरलीकरण हो, गरीब से गरीब व्यक्ति भी अपने हकों को भली भांति समझ पाएं, हकों को प्राप्त कर पाएं। ऐसी व्यवस्थाओं को हमने विकसित करने की दिशा में हमारा प्रयास है और मेरा विश्वास है कि हम उसको कर पाएंगे। मैं कभी-कभी उद्योग जगत के मित्रों से भी कहना चाहता हूं और मैं चाहूंगा कभी हमारे इस Forum में एक और पहलू पर भी हम सोच सकते हैं क्या, क्योंकि हमने अपने एजेंडे को बड़ा सीमित कर दिया है। और जब तक उसका दायरा नहीं बढ़ाएंगे पूरे माहौल में बदलाव नहीं आएगा। कितने उद्योगार हैं जिन्होंने अपने उद्योग चलाते-चलाते ऐसा माहौल बनाया, ऐसी व्यवस्था बनाई कि खुद का ही काम करने वाला एक मजदूर आगे चल करके Entrepreneur बना। कभी ये ऐसे ही तो खोज के निकालना चाहिए क्या उद्योगकार का यही काम है क्या। क्या 18-20 साल की उम्र में उसके यहां आया वो 60 साल का होने के बाद किसी काम का न रहे तब तक उसी के यहां फंसा पड़ा रहे। क्या ऐसा माहौल कभी उसने बताया कि हां मेरे यहां मजदूर के यहां पे आया था लेकिन मैंने देखा भई उसमें बहुत बड़ी क्षमता है, टैलेंट है, थोड़ा मैं उसको सहारा दे दूं वो अपने-आप में एक Entrepreneur बन सकता है और मैं ही एक-आध पुर्जा बनाएगा तो मैं खुद खरीद लूंगा जो मेरी फैक्टरी के लिए जरूरी है तो एक अच्छा Entrepreneur तैयार हो जाएगा।

कभी न कभी हमें सोचना चाहिए हमारे देश में छोटे और मध्यम एवं बड़े उद्योगकार कितने हैं कि जो हर वर्ष अपने ही यहां काम करने वाले कितने मजदूरों को उद्योगकार बनाया हो, Entrepreneur बनाया हो, Supplier बनाया हो, कितनों को बनाया कभी ये भी तो हिसाब लगाया जाए। उसी प्रकार से हमने देखा है कि आईटी फर्म, उसके विकास का मूल कारण क्या है, IT Firm के विकास का मूल कारण यह है कि उन्होंने अपन employee को कहा कि कुछ समय तुम्हारा अपना समय है। तुम खुद सॉफ्टवेयर विकसित करो, तुम अपने दिमाग का उपयोग करो और ये motivation के कारण सॉफ्टवेयर की दुनिया में नई-नई चीजें वो लेकर के आए फिर वो कम्पनी की बनी और बाद में जा करके वो बिकी। अवसर दिया गया, हमारे इतने सारे उद्योग चल रहे हैं, मैनुफैक्चरिंग का काम करते हैं, कैमिकल एक्टिविटी का काम करते हैं, क्या हमने हमारे यहां इस टैलेंट को innovation के लिए अवसर दिया है क्या? क्या उद्योगकारों को पता है कि जिसको आप अनपढ़ मानते हो, जिसको आप unskilled labour मानते हो, उसके अंदर भी वो ईश्वर ने ताकत दी है, वो आपकी फैक्टरी में

एकाध चीज ऐसी बदल देता है, कि आपके प्रोडक्ट की क्वालिटी इतनी बढ़ जाती है, बाजार में बहुत बड़ा मार्केट खड़ा हो जाता है, आप फायदा तो ले लेते हो लेकिन उसके innovation skill को recommend नहीं करते हो। मैं मानता हूँ हमारे उद्योगकारों ने अपने जीवन में, सरकारों ने भी और श्रम संगठनों ने भी पूछना चाहिए कि कितने उद्योगकार हैं, कितने उद्योग हैं कि जहाँ पर इनोवेशन को बल दिया गया है। हर वर्ष कम से कम एक नया इनोवेटेड काम निकलता है क्या? हमारे यहाँ सेना के विशेष दिवस मनाए जाते हैं, आर्मी का, एयरफोर्स का, नेवी का। राष्ट्रपति जी, प्रधानमंत्री सब जाते हैं, एट-होम करते हैं वो, तो मैं पिछली बार जब हमारे सेना के लोगों के पास गया तो मैंने उनको कहा भई ठीक है ये आपका चल रहा है कि ये ही चलाते रहोगे क्या? हम आते हैं, 30-40 मिनट वहाँ रुकते हैं, चायपान होता है, फिर चले जाते हैं। मैंने कहा मेरा एक सुझाव है अगर आप कर सकते हो तो, तो बोले क्या है सर? मैंने कहा क्या फौज में ऐसे छोटे-छोटे लोग हैं क्या, सिपाही होंगे, छोटे-छोटे लोग हैं, लेकिन उन्होंने काम करते-करते कोई न कोई इनोवेशन किया है जो देश की सुरक्षा के लिए बहुत काम आता है। उसमें नया आइडिया, क्योंकि वो फील्ड में है, उसे पता रहता है कि इसके बजाय ऐसा करो तो अच्छा रहेगा। मैंने ये कहा तो फिर हमारे आर्मी के लोगों ने दूँदना शुरू किया।

बहुत ही कम समय मिला था लेकिन कोई 12-15 लोगों को ले आए वो और जब उनकी innovations मैंने देखा, मैं हैरान था सेना के काम आनेवाली टेक्नोलॉजी के संदर्भ में, कपड़ों के संदर्भ में, इतने बारीक छोटी-छोटी चीजों में उन्होंने बदलाव लाकर के बताया था अगर इसको हम मल्टीप्लाई करें तो सेना के कितना बड़ा काम आएगा और भारत की रक्षा के लिए कितना बड़ा काम आएगा। लेकिन उस आखिरी इन्सान की तरफ देखता कौन है जी? उसकी क्षमता को कौन स्वीकार करता है? मुझे ये माहौल बदलना है कि मेरे उद्योगकार मित्र बहुत बड़ी डिग्री लेकर आया हुआ व्यक्ति ही दुनिया को कुछ देता है ऐसा नहीं है। छोटे से छोटा व्यक्ति भी दुनिया को बहुत कुछ दे करके जाता है, सिर्फ हमारी नजरों की तरफ नहीं होता है और इसलिए हम एक कल्चर विकसित कर सकते हैं, व्यवस्था विकसित कर सकते हैं कि जिसमें उन, और मैं तो चाहता हूँ श्रमिक संगठन भी ऐसे लोगों को सम्मानित करें, उद्योग भी सम्मानित करें और सरकार भी श्रम संसद के समय सामान्य मजदूर ने की हुई इनोवेशन जिसने देश का भला किया हो, उसमा सम्मान करने का कार्यक्रम करके हम श्रम की प्रतिष्ठा कैसे बढ़ाएं उस दिशा में हमें आगे बढ़ना चाहिए। हमें एक नए तरीके से चीजों को कैसे सोचना चाहिए, नई चीजों में कैसे बदलाव लाना चाहिए, उस पर सोचने की आवश्यकता है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि मजदूर हमेशा मजदूर क्यों रहे? उसी प्रकार से कुछ लोग ऐसे होते हैं कि पिताजी एक कारखाने में काम करते हैं, बेटा भी साथ जाना शुरू कर दिया, और वहीं काम करते, करते, करते एकाध चीज सीख लेता है और अपनी गाड़ी चला लेता है। उसके पास ऑफिशियल कोई डिग्री नहीं होती है, कोई सर्टिफिकेट नहीं होता है और उसके लिए वो हमेशा उस उद्योगकार की कृपा पर जीने के लिए मजबूर हो जाता है। इससे बड़ा शोषण क्या हो सकता है कि उसको जो जिसके यहाँ उसके पिताजी काम करते थे, अब उसको वहीं पर काम करना पड़ रहा है, क्यों, क्योंकि उसके पास स्किल है लेकिन स्किल को दुनिया के अंदर ले जाने के लिए एक जो सर्टिफिकेट चाहिए वो नहीं है तो कोई घुसने नहीं देता है और वो भी कहीं जाने की हिम्मत नहीं करता है, उसको लगता है चलिए ये ही मेरे मां-बाप हैं उन्होंने ही मेरे बाप को संभाला था, मुझे भी संभाल लिया, चलिए भई जो दें मैं काम कर लूँगा। इससे बड़ी कोई अपमानजनक स्थिति नहीं हो सकती हमारी। और इसको बदलने का मेरे भीतर एक दर्द बढ़ा था और उसी में से हमने एक योजना बनाई है और मैं मानता हूँ ये योजना श्रमिक के जीवन को और मैं नहीं मानता किसी श्रमिक संगठनों ने इस पर ध्यान गया होगा। कभी उसने सोचा नहीं होगा कि कोई सरकार श्रमिकों के लिए सोचती है तो कैसे सोचती है? हमने कहा कि जो परम्परागत इस प्रकार के शिक्षा पाए बिना ही चीजों को करता है भले ही उसकी उम्र 30 हो, 40 हो गई, 50 हो गई होगी, सरकार ने उसको सर्टिफाई करना चाहिए, official recognition देना चाहिए, official government का सर्टिफिकेट देना चाहिए ताकि उनका confidence लेवल बढ़ेगा, उसका मार्केट वैल्यू बढ़ेगा और वो एक उद्योगकार के यहाँ कभी अपाहिज बन करके जिन्दगी नहीं गुजारेगा। हमने officially ये decision लिया है।

कहने का तात्पर्य ये है कि हमें इन दिशाओं में सोचने की आवश्यकता है। हमें बदलाव करने की दिशा में प्रयास करने चाहिए। इसी प्रकार से एक बात की ओर ध्यान देने की मैं आवश्यकता समझता हूँ, इसको कोई गलत अर्थ न निकाले, कोई बुरा न माने। कभी-कभार, जब चर्चा होती है कि उद्योग की भलाई, ये बात ठीक है कि देश की भलाई के लिए उद्योगों का विकास आवश्यक है, उद्योग की भलाई और उद्योगपति की भलाई, इसमें बहुत ही बारीक रेखा होती है। देश की भलाई और सरकार की भलाई इसमें बहुत बारीक रेखा होती है। श्रम संगठन की भलाई और श्रमिक की भलाई, बहुत बारीक रेखा होती है। और इसलिए इस बारीक रेखा की नजाकत को कभी-कभार उद्योग बचाना चाहते हैं लेकिन उनमें कभी-कभार हम उद्योगपति को बचा लेते हैं। कभी-कभार हम बात तो कर लेते हैं देश को बचाने की लेकिन कोशिश सरकार को बचाने की करते हैं। और उसी प्रकार से कभी-कभार हम बात श्रमिक की करते हैं लेकिन हम कोशिश हमारे श्रम संगठन की सुरक्षा की करते हैं। हम तीनों पार्टनर यहाँ बैठे हैं, हम तीनों पार्टनर यहाँ बैठे हैं और तीनों ने इस बारीक रेखा की मर्यादाओं को स्वीकार करना होगा, letter and spirit को स्वीकार करना होगा तब मैं मानता हूँ श्रमिक का भी भला होगा, देश के उद्योग के विकास की यात्रा भी चलेगी और देश का भी भला होगा, सरकारों की भलाई के लिए नहीं चलता होगी। और इसलिए इन मूलभूत बातों की ओर हम कैसे मिल-बैठ करके एक सकारात्मक माहौल बनाने के भी दस कदम हो सकते हैं, श्रमिक की भलाई के दस कदम हो सकते हैं आवश्यक है तो राष्ट्र को आगे बढ़ाने की भी दस कदम हो सकते हैं वो भी

इसके साथ-साथ आना चाहिए। जब तक हम इन बातों को संतुलित रूप से आगे नहीं ले जाएंगे, तब तक हम माहौल बदलने में सफल नहीं होंगे। और मुझे विश्वास है कि आज की श्रम संसद में बैठ करके हम लोग उस माहौल को निर्माण करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। भारत में 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 साल से कम आयु की है। हमारा देश एक प्रकार से विश्व का सबसे नौजवान देश है। आज दुनिया को skilled workforce की आवश्यकता है। Skill Development और Skill India ये मिशन हमारे नौजवानों को रोजगार कैसे मिले, अगर हम जो आज रोजगारी में हैं जो हमारे संगठन के सदस्य हैं, उनकी चिन्ता कर-करके बैठेंगे तो हो सकता है कि उनके हितों का भी भला हो जाएगा, उनकी रक्षा भी हो जाएगी, दो-चार चीजें हम उनको दिलवा भी देंगे लेकिन यहां बैठा हुआ कोई व्यक्ति ऐसी सीमित सोच वाला नहीं है ये मेरा विश्वास है। यहां बैठा हुआ हर व्यक्ति जो आज श्रमिक है उनकी तो चिन्ता करता ही करता है, लेकिन जो नौजवान बेरोजगार हैं जिनको कहीं न कहीं काम मिल जाए, इसकी उसको तलाश है, हमें उनके दरवाजे बंद करने का कोई हम नहीं है। जब तक हम हमारे देश के और नौजवानों को रोजगार देने के लिए अवसर उपलब्ध नहीं कराएंगे तो हम जाने-अनजाने में गरीब का कहीं नुकसान तो नहीं कर देंगे। हो सकता है वो आज गरीब है श्रमिक नहीं बन पाया है, वो दरवाजे पर दस्तक दे रहा है और इसीलिए सरकार ने एक initiative लिया है apprenticeship को प्रोत्साहन देना। हमें जान करके हैरानी होगी, हम सबको लगता है हमारा देश आगे बढ़ना चाहिए और कभी पीछे रहता है तो हमी लोग कहते हैं देखो बातें बड़ी करते थे, वो तो वहां पहुंच गया ये यहां रह गया, ये हम करते ही हैं। लेकिन जो पहुंचे हैं, आज चीन के अंदर जो भी साम्यवादी विचार से चलने वाले मूलभूत तो लोग हैं। चीन के अंदर दो करोड़ apprenticeship पर लोग काम कर रहे हैं, चीन के अंदर। जापान में एक करोड़ apprenticeship में काम कर रहे हैं। जर्मनी बहुत छोटा देश है, हमारे देश के किसी राज्य से भी छोटा देश है वहां पर तीस लाख लोग apprenticeship के रूप में काम कर रहे हैं, लेकिन मुझे आज दुख के साथ कहना चाहिए, सवा सौ करोड़ का हिन्दुस्तान, सिर्फ तीन लाख लोग apprenticeship पर काम कर रहे हैं। मेरे नौजवानों का क्या होगा मैं पूछना चाहता हूं। मैं सभी श्रमिक संगठनों से पूछना चाहता हूं कि इन नौजवानों को रोजगार मिलना चाहिए कि नहीं मिलना चाहिए। इन नौजवानों के लिए अवसर खुलने चाहिए कि नहीं खुलने चाहिए। और भारत को आगे बढ़ाना है तो हमारे skill को काम में लाने के लिए ये हमें अवसर देना पड़ेगा। सरकारों ने, उद्योगकारों ने भी सोचना होगा इसलिए कि कानून के दायरे में फंस जाएंगे इसलिए कोई apprenticeship किसी को देनी नहीं, किसी नौजवान को अवसर नहीं देना, ये उद्योगकार जो दरवाजे बंद करके बैठे हैं, मैं नहीं मानता हूं ये लम्बे अरसे तक दरवाजे बंद करके बैठ पाएंगे। देश का नौजवान लम्बे अरसे तक इन्तजार नहीं करेगा। और इसलिए मैं उद्योगकारों को विशेष रूप से आग्रह करता हूं कि आपका दायित्व बनता है, मुनाफा कम होगा, होगा लेकिन अगर इतनी मात्रा में आपके यहां श्रमिक हैं तो इतनी मात्रा में apprenticeship, ये आपकी social responsibility का हिस्सा बनना चाहिए। और इस प्रकार से क्या हम सपना नहीं दे सकते। दो करोड़ कर न पायें ठीक है, जब कर पाएंगे, कर पाएंगे अभी कम से कम तीन लाख में से 20 लाख apprenticeship पर जा सकते हैं हम क्या। कम से कम इतना तो करें। करोड़ों नौजवानों को रोजगार चाहिए, कहीं से तो शुरू करें। और इसलिए मैं चाहूंगा कि जो श्रमिक आज हैं उनकी चिन्ता करने वाले लोगों का ये भी दायित्व है कि जिनकी श्रमिक बनने की संभावना है उनकी जिन्दगी की भी चिन्ता उस नौजवान की भी करने की आवश्यकता है जो गरीब है। पिछले 16 अक्टूबर को हमने श्रमेव जयते के अभियान की शुरुआत की थी। ये सर्वांगीण प्रयास है हमारा। जिन सुविधाओं की शुरुआत हमने की उनकी प्रगति आप सबकी नजर में है। यूनिवर्सल एकाउंट नम्बर (यूएएन) इसके माध्यम से प्रोविडेंट फंड के एकाउंट पोर्टेबल हो गए हैं बल्कि लगभग 4 करोड़ 67 लाख मजदूरों को digital network platform का already लाभ मिलना शुरू हो गया है। पीएफपी ऑनलाइन लाभ ले रहा है ये चीजें नहीं थीं, इन चीजों का वो लाभ ले रहा है ये ही तो श्रमिक को empower करने के लिए टेक्नोलॉजी का सदुपयोग करने का प्रयास किया है। जब हम सरकार में आए हमारे देश में कई लोग ऐसे थे कि जिनको पचास रुपये पेंशन मिलता था, अस्सी रुपये पेंशन मिलता था, सौ रुपये पेंशन मिलता था, कुछ लोग तो पेंशन लेने के लिए जाते नहीं थे क्योंकि पेंशन से ऑटोरिक्शा का खर्चा ज्यादा होता था। इस देश में करीब-करीब बीस लाख से अधिक ऐसे श्रमिक थे जिनको पचास रुपया, सौ रुपया, दौ सौ रुपया पेंशन मिलता था। हमने आ करके, बहुत बड़ा आर्थिक बोझ लगा है, सबके लिए minimum पेंशन एक हजार रुपया कर दिया है। मैं आशा करता हूं कि हमारे श्रमिक संगठन, ये हमारा जो pro-active initiative है उसके प्रति भी उस भाव से देखें ताकि हम सबको मिल करके दौड़ने का आनंद आ जाए, चार नई चीजें करने का उमंग आ जाए क्योंकि हमें चलना नहीं है और मुझे मैं मानता हूं, अगर इस देश में इतने सारे प्रधानमंत्री हो गए होंगे लेकिन श्रमिकों पर किसी एक प्रधानमंत्री पर सबसे ज्यादा हक है तो मुझ पर। क्योंकि मैं उसी बिरादरी से निकल कर आया हूं, मैंने गरीबी देखी है और इसलिए गरीब के हाल को समझने के लिए मुझे कैमरामैन को लेकर जाने की जरूरत नहीं पड़ती है। मैं उसको भली-भांति समझता हूं और इसलिए जो बातें मैं बता रहा हूं। भीतर एक आग है, कुछ करना है। गांव, गरीब, किसान, मजदूर, वंचित, दलित, पीड़ित शोषित उनके लिए कुछ करना है। लेकिन हरेक के करने की सोच अलग होगी, रास्ते अलग होंगे। हमारी एक अलग सोच है, अलग रास्ते हैं लेकिन लक्ष्य यही है कि मेरे देश के मजदूर का भला हो, मेरे देश के गरीब का भला हो, मेरे देश के किसानों का भला हो, ये सपने लेकर के हम चल पड़े हैं। और इसलिए जैसा मैंने कहा हमने apprentice sector में सुधार किया। हमने on the job training के मौके बढ़ गए हैं, उस दिशा में हमने काम किया है। आज हमने हेल्थ को सेक्टर को ESIC 2.0 स्कीम को लांच किया है। हम कभी-कभार ये तो देखते हैं कि भई काम मिलना चाहिए, लेकिन कैसे मिले, मिल रहा है कि नहीं मिल रहा है। उसके लिए न सरकारों को फुरसत है, न श्रमिक संगठनों को फुरसत है। उनको तो लगता है देखो यार, कागज पर दिखा दे,

ये तुमको दिलवा दिया या नहीं दिलवा दिया। वो श्रमिक भी बड़ा खुश है, यार मैं इसका मेम्बर बन गया हूँ मेरा काम हो गया। मैं इस स्थिति को बदलना चाहता हूँ। मैं श्रमिक संगठन और सरकार की पार्टनरशिप से आगे बढ़ना चाहता हूँ। कंधे से कंधा मिलाकर के आगे चलना चाहता हूँ और अगर हमने ये अस्पतालों की व्यवस्था को बदलने की दिशा में काम किया, अब छोटा निर्णय है कि भई हर दिन चद्दर बदलो। अब मुझे बताइए health की दृष्टि से, hygiene की दृष्टि से, ये सब जानते हैं कि बदलनी चाहिए और लोग मानते होंगे कि बदलें, लेकिन हमको मालूम है कि लोग नहीं बदलते। ठीक है, आया है patient पड़ा है। आखिरकार मुझे रास्ता खोजना पड़ा, मैंने कहा हर दिन की चद्दर का कलर ही अलग होगा, patient को पता चलेगा कि चद्दर बदली कि नहीं बदली। हमारे देश के बड़े-बड़े जो विद्वान लोग हैं वो मुझे सवाल करते रहते हैं कि मोदी कुछ बड़ा ले आओ, कुछ बड़ा। बहुत सरकारें बड़ा-बड़ा ले आईं। मुझे तो मेरे गरीब के लिए जीना है, मेरे गरीब के लिए कुछ काम करना है इसलिए मेरा दिमाग इसी में चलता रहता है। यही, यही मैं सोच, और मैं दिल से बातें कर रहा हूँ कि ये अन्य जो कई चीजें लाए हैं। हम चाहते हैं कि श्रमिक की हेल्थ को लेकर के चिन्ता होनी चाहिए, होनी चाहिए। और हमने उस दिशा में हमने एक तो उसके सारे हेल्थ रिकॉर्ड ऑनलाइन कर दिए ताकि अब उसको अपना ब्लड टेस्ट का क्या हुआ, यूरिन टेस्ट का क्या हुआ, दुनिया भर में चक्कर नहीं काटना पड़ेगा। अपने मोबाइल फोन पर सारी चीजें उपलब्ध हो जाएं ये व्यवस्था की है ताकि श्रमिक को सुविधा कैसे हो, हम उस दिशा में काम कर रहे हैं। और मैं मानता हूँ कि उस काम के कारण उसको लाभ होगा।

आज हमारे देश में असंगठित मजदूर कुल मजदूरों का 93 पर्सेंट है। इस सरकार ने असंगठित मजदूरों के संबंध में बहुत ही constructive way में और well planned way में योजनाएं बनाई हैं और हम आगे बढ़ रहे हैं। सबसे बड़ी बात है असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा कैसे मिले। न उसे स्वास्थ्य सुरक्षा है, न जीवन बीमा है और न ही पेंशन है और बड़ी संख्या में असंगठित ग्रामीण मजदूर अनपढ़ हैं, जिन्हें अपनी बात कहां कहना है, कैसे पहुंचे, इसकी कोई जानकारी तक नहीं है। ऐसे मजदूर के लिए सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराने में सरकार का उत्तरदायित्व मानता हूँ। देश के गरीब, असंगठित वर्गों को ध्यान में रख करके हमने तीन महत्वपूर्ण योजनाएं शुरू कीं। और ये योजनाएं गरीब के लिए हैं। अमीर का उससे कोई लेना-देना नहीं है। और मैं मानता हूँ, सभी श्रमिक संगठनों से मैं आग्रह करूंगा कि आप भी इस बात में मदद कीजिए। अगर किसी के घर में, हम कई यहां संगठन है जो असंगठित मजदूरों का काम करते हैं। कुछ लोग हैं जो घरों में बर्तन साफ करने वाले लोग होते हैं, उनका संगठन चलाते हैं। क्या हम कोशिश नहीं करे तो उसके मालिकों को मिल करके कहे कि भई आपके यहां ये लड़का कपड़े धोता है, बर्तन साफ करता है या खाना पकाता है या गाड़ी चलाता है। या आपका धोबी है। इसके लिए ये-ये सरकार की स्कीम है। आप एक मालिक हो, इसके लिए इतना पैसा बैंक में डालो, उसका जीवन भरा हो जाएगा। मैं मानता हूँ हर कोई इसको करेगा। हम मध्यम वर्ग के लोगों को भी अगर समझाएंगे कि भई तुम्हारे साथ काम करने वाले जो गरीब लोग हैं उनको इन स्कीम का फायदा तुम दो। तुमको कोई महंगा नहीं पड़ने वाला है, तुम्हारे लिए तो एक फाइव स्टार होटल का एक खाने से ज्यादा का खर्च नहीं है। लेकिन उस गरीब की तो जिन्दगी बदल जाएगी और इसलिए हमने अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और मैं बताऊं यानी एक महीने का एक रुपया, 12 महीने का 12 रुपया। एक स्कीम ऐसी है एक दिन का सिर्फ 80-90 पैसा। साल भर का 330 रुपया। लेकिन उसको जीवन भर उसकी व्यवस्था मिल सकती है। ये काम उसके मालिक, जिसके वहां वह काम करता है, वो कर सकते हैं और श्रमिक संगठन एक सामाजिक काम के तौर पर इस बात को आगे बढ़ा सकते हैं। सरकार से कंधे से कंधा मिलाकर काम करेंगे। मुझे लगता है कि इसका उसको फायदा होगा और हमने यह फायदा दिलवाना चाहिए। व्यवस्थाएं हैं, योजनाएं हैं। अटल पेंशन योजना। अगर आज से उसको जोड़ दिया जाए, समझा दिया जाए उसका तो जीवन धन्य हो जाएगा कि भई चलो 60 साल के बाद मुझे ये लाभ मिलेगा। मैं समझता हूँ कि हम एक सामाजिक चेतना जगाने का भी काम करें, सामाजिक बदलाव का भी काम करें और उस काम को आगे बढ़ाएंगे तो मैं समझता हूँ बहुत सारी बातें हम कर पाएंगे। कई विषय हैं जिसको मैं आपके सामने रखता ही चला जाता हूँ। लेकिन मुझे विश्वास है कि इस श्रम संसद के अंदर जो कुछ भी महत्वपूर्ण चर्चाएं हो रही हैं। हमारे वित्त मंत्री और उनकी एक कमेटी बनी है जो उनको सुन रही है। और बातचीत से ही अच्छे नतीजे निकलते हैं, सुखद परिणाम निकलेंगे। कल भी मेरी श्रम संगठन के प्रमुख लोगों के साथ मुझे मिलने का अवसर मिला था, उनको सुनने का अवसर मिला था और मैं भली-भांति उनकी बात को, उनकी भावनाओं को समझता हूँ। मिल-बांट करके हमें आगे बढ़ना है और हम देश को आगे बढ़ाने में कैसे काम आए, देश को आर्थिक नई ऊंचाइयों पर कैसे ले जाएं, देश में नौजवानों को अधिकतम रोजगार के अवसर कैसे उपलब्ध कराएं।

आज भारत के सामने मौका है विश्व के परिदृश्य में भारत के सामने मौका है। यह मौका अगर हमने खो दिया तो फिर पता नहीं हमारे हाथ में कब मौका आएगा और उस काम को लेकर आगे बढ़ें इसी एक अपेक्षा के साथ मेरी इस श्रम संसद को हृदयपूर्वक बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं, उत्तर परिणाम निकलेंगे इस भरोसे के साथ और साथ मिल करके आगे चलेंगे इस विश्वास के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ हिमांशु सिंह/ सुरेन्द्र कुमार/ मनीषा/ निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

15-जुलाई-2015 20:34 IST

**"Skill India" कार्यक्रम के शुभारम्भ पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ**

उपस्थित सभी महानुभाव और इस सभागृह के बाहर भी Technology के माध्यम से जुड़े हुए और यहां उपस्थित सभी मेरे युवा मित्रों

आज पूरा विश्व 'विश्व युवा कौशल दिवस' मना रहा है। भारत भी उस अवसर पर एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। कुछ दिन पूर्व पूरे विश्व ने अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस मनाया और हमारे देश के लोगों को ताज्जुब हुआ कि दुनिया हमारी तरफ, इस तरफ देख रही है क्या? हमें कभी विश्वास ही नहीं था कि विश्व कभी हमारी तरफ भी गर्व के साथ देखता है। विश्व योगा दिवस पर हमने अनुभव किया कि आज पूरा विश्व भारत के प्रति एक बड़े आदर और गौरव के साथ देखता है।

हमारे यहां शिक्षा के संबंध में बहुत सारी चर्चाएं होती रहती हैं कि जितने बच्चे स्कूल जाते हैं। Secondary में उससे कम हो जाते हैं, Higher Secondary में उससे कम हो जाते हैं। Colleges में वो संख्या और गिर जाती है और topper तो बहुत कम लोग पहुंचते हैं। तो ये सब जाते कहां है और जो जाते हैं उनका क्या होता है? जो ऊपर जाएं उनकी तो सब प्रकार की चिन्ता होती है। लेकिन जो रह जाए उसकी भी तो होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए। ये हमारा Mission उन लोगों के लिए है, जो रह जाते हैं। और रह कौन जाते हैं? अमीर परिवार का बच्चा नहीं रह जाता। उसको तो कुछ न कुछ मिल जाता है। पैतृक परंपरा से। जो रह जाता है वो गरीब का बच्चा होता है, और एक प्रकार से हमने बहुत योजनापूर्वक गरीबी के खिलाफ एक जंग छेड़ी है। और ये जंग जीतना है। और ये गरीबी के खिलाफ जंग जीतने के लिए गरीब की ही मुझे फौज बनानी है। हर गरीब मेरा फौजी है, हर गरीब नौजवान मेरा फौजी है। उन्हीं की ताकत से, उन्हीं के बलबूते पर ये गरीबी के खिलाफ जंग जीतना है।

आज देश का कोई नौजवान हाथ फैला करके कुछ मांगने के लिए तैयार नहीं है। वो दयनीय जिंदगी जीना नहीं चाहता। वो आत्म-सम्मान से जीना चाहता है, वो गर्व से जीना चाहता है। skill, कौशल्य, सामर्थ्य ये सिर्फ जेब में रुपया लाता है, ऐसा नहीं है। वो जीवन में आत्मविश्वास भर देता है। जीवन में एक नई ताकत भर देता है। उसे भरोसा होता है कि दुनिया में कहीं पर भी जाऊंगा मेरे पास ये ताकत है, मैं अपना पेट भर लूंगा, मैं कभी भीख नहीं मांगूंगा। ये सामर्थ्य उसके भीतर आता है और इसलिए ये Skill Development ये सिर्फ पेट भरने के लिए जेब भरने का कार्यक्रम नहीं है। ये हमारे गरीब परिवारों में एक नया आत्मविश्वास भरना और देश में एक नई ऊर्जा लाने का प्रयास है।

हमारे यहां सालों से, सदियों से हमने सुना है। अमीर परिवारों में क्या बात होती है वो तो हमें मालूम नहीं है। लेकिन हम जिस समाज, जीवन से आते हैं। हम अक्सर सुना करते थे हमारे परिवार में अगल-बगल में सब कुछ हमारे पिताजी और हमारे नौजवान साथियों के पिताजी यही कहते थे, अरे भाई कुछ काम सीखो। अपने पैरों पर खड़े हो जाना।

हमारे देश में मध्यम वर्ग, निम्न मध्यम वर्ग, गरीब परिवारों में ये सहज बोला जाता है। 12 से 15 साल का बच्चा हुआ तो मां-बाप यही कहते हैं कि अरे, भाई कुछ काम सीखो, अपने पैरों पर खड़े हो जाओ। अगर जो बात हमारे घर-घर में गूंजती है वो सरकार के कानों तक क्यों नहीं पहुंचती है और हमने उस आवाज को सुना है, उस दर्द को सुना है। जो हर मां-बाप के मन में रहता है कि बेटा या बेटी कुछ काम सीखे अपने पैरों पर खड़े हो जाएं। एक बार अपने संतान पैरों पर खड़े हो जाएं तो गरीब परिवार के मां-बाप को लगता है कि चलिए जिंदगी धन्य हो गई। ये उसके मकसद में रहता है। उसका कोई मकसद कोई बहुत बड़ी बंगला बना करके, बहुत बड़ी गाड़ियां खड़ी करदे वो नहीं रहता है। Skill Mission के द्वारा हमारी कोशिश है, उन सपनों को पूरा करना और इसलिए एक structure way में एक organised way में राज्यों को साथ ले करके एक नए सिरे से इस काम को हम आगे बढ़ाएंगे।

पिछली शताब्दी में, दुनिया के अंदर हमने IIT के माध्यम से विश्व में अपना नाम बनाया है, दुनिया ने हमारी IIT को एक अच्छे institution के रूप में स्वीकार किया, हमें गर्व है इस बात का लेकिन इस शताब्दी में हमारी आवश्यकता है ITI की, अगर पिछली शताब्दी में IIT ने दुनिया में नाम कमाया, तो इस शताब्दी में हमारी छोटी, छोटी IIT की इकाइयां ये

दुनिया में नाम कमाएं ये सपना ले करके हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

हम कहते हैं कि हमारे पास 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है, अगर उसके पास कौशल्य नहीं होगा, उसके पास अगर अवसर नहीं होंगे तो चुनौतियों को कैसे पार कर पाएगा। अगर वो चुनौतियों को पार नहीं कर पाएगा, तो हमारे लिए वो खुद एक चुनौती बन जाएगा और इसलिए भारत के लिए सबसे पहली अगर कोई प्राथमिकता है तो देश के नौजवानों के लिए रोजगार उपलब्ध कराना है। रोजगार के योग्य नौजवानों को तैयार करना है। रोजगार के योग्य नौजवान को तैयार करने के लिए पूरा एक mechanism, एक व्यवस्था एक structure तैयार करना, इस mission के द्वारा उन सभी आवश्यकताओं को पूर्ति करने का प्रयास करना। हम विश्व के युवा देश हैं, दुनिया के बहुत देश हैं जहां समृद्धि बहुत है लेकिन लोग नहीं हैं। घर में चार गाड़ी होंगी लेकिन चलाए कौन ये चिन्ता का विषय है।

दुनिया को जो workforce की जरूरत पड़ने वाली है हम लिख करके रखें आने वाले दशकों में विश्व को सबसे ज्यादा workforce अगर कहीं से मिलेगा तो हिन्दुस्तान से मिलेगा। दुनिया की मांग हमारे सामने स्पष्ट है कि दुनिया को जरूरत पड़ने वाली है लेकिन क्या हम उसके लिए सज्ज हैं क्या। हमने तैयारी की है क्या। ज्यादा से ज्यादा अभी हमारा ध्यान अभी nursing staff की तरफ रहता है। आप देखिए तो nursing staff के लोग जाते हैं या हमारे जो message का काम करने वाले लोग हैं जो gulf countries में गए हैं उसी के इर्द-गिर्द हमारा चला है। हमें न सिर्फ भारत को लेकिन पूरे विश्व की human resource की requirement का mapping करके भारत में अभी से सज्ज करना चाहिए कि चलिए आपको nursing में Para-medical के लोग चाहिए ये हमारी 25 institution हैं, certified institution हैं, यहां से नौजवानों को ले जाइए आपका काम चलाइए। हमें विश्व की जो आवश्यकताएं हैं, एक बहुत बड़ा job market है, वो job market को वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करके हमने अपने लोगों को तैयार करना है। आज हमारे यहां क्या हालत है, हममें से बहुत लोग होंगे जिनको एक बात का अनुभव आया होगा यहां बैठे हुए, कभी न कभी अपने दोस्तों को कहा होगा यार देखो तुम्हारे यहां कोई अच्छा driver मिले तो मेरे पास driver नहीं है। अब ये सवाल का जवाब हमें ढूंढना है कि देश में नौजवान हैं, बेरोजगार हैं, और वो driver के बिना परेशान हैं। क्या हम रास्ता नहीं खोज सकते क्या। और आज फिर क्या होता है कि वो परम्परा से कहीं पर गाड़ी साफ करते-करते गियर बदलना सीख जाता है और steering पकड़ के तो हम कभी कभी risk लेके उसे रख लेते हैं। अब हमारी गाड़ी का कोई वो training institute बना करके वो सीखता है और कभी-कभार हमारा risk भी रहता है। क्या हम इन लोगों को certify करने की व्यवस्था कर सकते हैं जो अपने तरीके से परम्परागत सीख सके किसी institution में नहीं गए लेकिन कम से कम जो उसको रखता है उसको पता चले कि हां भाई ये इसके पास ये certificate है मतलब कहीं उसका exam हो चुका है। भले अपने आप सीखा हो। आज उम्र भले 35-40 पार कर गया हो लेकिन उसको लगता है के भई मेरे पास कोई authority नहीं है, कोई identity नहीं है, तो ये सरकार ये व्यवस्था करने जा रही है के भले आप परम्परा से सीखे हो लेकिन अगर आप basic norms को पार करते हो तो हम आपको certificate देंगे जो certificate किसी engineer से कम नहीं होगा, मैं विश्वास से कहता हूं। अब ये बड़ी कठिनाई है, सब्बरवाल बता रहे थे कि हर कोई कहता है भई अनुभव क्या है, वो कहता है पहले काम तो दो फिर मैं अनुभव का बताऊं। पहले मुर्गा कि पहले अंडा, इसी का बहस चल रहा है, नौकरी नहीं अनुभव नहीं, अनुभव नहीं इसलिए नौकरी नहीं, ये ही चलता रहता है।

हमारे साथ हमारी हां आवश्यकता है entrepreneurship को बल देना। कभी-कभी उद्योग जगत के लोग भी entrepreneur को रखने से डरते हैं, उनको लगता है यार रख लूंगा और सरकार का कोई साहब आके सर गिनेगा और ज्यादा हो गए तो मर गया मेरे कारखाने को ताला लग जाएगा, तो रखने को तैयार नहीं है। कानून की जकड़न भी कभी-कभी ऐसी है कि हमारे नौजवानों को जगह नहीं मिलती। हम चाहते हैं कि देश में रोजगारों का अवसर बढ़े। जो entrepreneurship के लिए जाना चाहता है उसको अवसर मिले। जो apprenticeship के लिए जाना चाहता है उसको अवसर मिले। जब तक उसको ये अवसर नहीं मिलेगा अनुभव आएगा नहीं। और इससे हमारी कोशिश है के apprenticeship को कैसे बढ़ावा दें। इस पूरे mission को हमने skill तक सीमित नहीं रखा। इसके साथ entrepreneurship को जोड़ा। क्योंकि हम ये नहीं चाहते कि हर कोई बने तो बस कहीं-कहीं नौकरी खोजता रहे, जरूरी नहीं है। एक ड्राइवर भी entrepreneur बन सकता है। वो भी contract पर गाड़ी लेके sub-contractor बनके गाड़ी चला सकता है। हम उसके अंदर ये skill लाना चाहते हैं। जिस प्रकार से कभी-कभार क्या होता है जब तक आप value addition नहीं करते आप कुछ भी नहीं कर सकते। मान लीजिए आपको driving आता है लेकिन आप उसको कहते हो साहब मुझे computer का typing भी आता है। तो तुरन्त कहे अच्छा-अच्छा भई ये भी आता है, तो चलो-चलो फिर जब driving का काम पूरा होगा तो कम्प्यूटर करते रहना। तो जब उसको पता चले extra quality है तो उसका value बढ़ जाता है। हम चाहते हैं कि skill में multiple activity की ताकत उसकी हो। मैं देख रहा हूं मुझे कोई बता रहा था, बहुत समय हुआ कोई एक नौजवान था, plumber था, तो plumber के नाते जो काम मिलता था वो करता रहता था, लेकिन उसने धीरे-धीरे अपने-आपको yoga trainer के लिए तैयार किया और मजा ये है कि सुबह एक-दो घंटे yoga trainer के लिए जा करके वो ज्यादा कमाता था, जबकि plumber से बाद में कम। फिर क्या हुआ वो yoga training के साथ अब plumber भी जुड़



गया तो जहाँ yoga training करता है वो ही लोग को कहें यार देखो उधर plumber की जरूरत है तुम चले जाओ। उसने एक नई चीज सीखी। दोनों चीजें ऐसी हैं कि जिसमें उसको कोई college की degree की जरूरत नहीं थी। वो कमाना शुरू कर दिया। हम चाहते हैं कि देश के अन्दर इन बातों को कैसे भरोसा करें। आने वाले दिनों में पूरे विश्व में, पूरे विश्व में करोड़ों-करोड़ों की तादाद में workforce की requirement है। और अगले दशक में हमारे पास चार-साढ़े चार, पांच करोड़ के करीब लोग surplus होंगे workforce हमारे पास। अगर हम ये mismatch को दूर करते हैं, हम आवश्यकता के अनुसार उसको तैयार करते हैं तो हमारे नौजवानों को रोजगार के लिए अवसर मिलेंगे। कभी-कभार क्या होता है कि एक area है जहाँ chemical की industry आ रही है लेकिन वहाँ पर क्या पढ़ाया जाता है तो automobile पढ़ाया जाता है। अब उसको वहाँ job मिलती नहीं है। हमें mapping करना होगा कि काम किया है, बहुत बड़ी मात्रा में काम हुआ है कि किस इलाके में हमारा क्या potential है, क्या-क्या establishment है, वहाँ पर किस प्रकार की requirement है। हम उस प्रकार का human resource training करेंगे ताकि उसको walk to work के लिए वो तैयार हो जाएं, उसको अपने घर के पास ही काम-काज मिल जाए तो उसको आर्थिक रूप से ज्यादा बोझ नहीं बनता है। नहीं तो होता क्या है कि जो चीज को सीखता है उसके 100 किलोमीटर की range में वो काम ही नहीं होता। मुझे याद है जब मैं गुजरात में काम करता था, शुरू-शुरू में मैंने देखा automobile में वो चीजें पढ़ाई जाती थीं जो गाड़ियां बाजार में थीं ही नहीं। हमारी technology थी। खैर बाद में तो course बदल दिए सब, जो trainers थे उनकी भी training की, काफी कुछ बदलाव लाना पड़ा, लेकिन आज भी शायद कई जगह पर बहुत जगह पर ऐसा हो। और इसलिए आवश्यक हैं कि हमारी सारी training institutes को dynamic बनाना है। टेक्नोलॉजी इतनी तेजी से बदल रही है, अगर हमारी training dynamic नहीं होगी तो हमारा वो व्यक्ति relevant नहीं रहेगा। पुराने जमाने के cook को आज oven चलाना नहीं आता है तो घर में वो cook काम नहीं करेगा। उसको आना चाहिए, oven क्या, सीखना पड़ता है हर चीज को, additional training आवश्यक होती है और इसलिए dynamics बहुत आवश्यक है उसके लिए। हम जिस training की ओर बल दे रहे हैं उसकी दिशा में हमारा प्रयास है। कौशल्य के संबंध में भारत की पहचान सदियों से रही है। हमने अपनी इस विधा को भुला दिया है। सदियों पहले हमारे यहाँ, हमारी विशेषताओं को कितना माना जाता था। हमारे कौशल्य की ताकत को माना जाता था। हमने फिर से एक बार उसको regain करना है। अगर आज दुनिया में चीन ने अपनी ये पहचान बनाई है कि चीन की एक पहचान बन गई है कि जैसे वो दुनिया की manufacturing factory बन गया है। अगर चीन की पहचान दुनिया की manufacturing factory की है तो हिन्दुस्तान की पहचान दुनिया की required human resource का capital बनने की बन सकती है। हमारे पास जो ताकत है उस पर हमें बल देना है। हम अपनी ताकत पर जितना हम जोर लगाएंगे हम चीजों को उतना प्राप्त कर पाएंगे और इसलिए हमारी कोशिश यह है कि हम mapping करके, human resource की requirement के अनुसार training करें। और हमें पता होना चाहिए। आज, आज भी मैं बताता हूँ आज देश में लाखों की तादाद में trained drivers नहीं है। देश को जितने trained drivers चाहिए, उसकी perfect training के लिए जिस प्रकार की आधुनिक व्यवस्था चाहिए वो व्यवस्था भी उपलब्ध नहीं है। फिर तो वो चलते-चलते सीखता रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि बेरोजगारी का कोई कारण नहीं है। अगर हम रोजगार को ध्यान में रखते हुए, विकास के मॉडल को ध्यान में रखते हुए human resource development के design तैयार करें। अगर इन तीनों को जोड़ करके प्रयास करें।

कभी-कभार क्या होता है कि जो इस प्रकार के training institutions हैं उनको ये पता नहीं होता कि दुनिया कैसे बदल रही है। वो अपना पुराने ढर्रे से चलते हैं। आवश्यकता है जैसे आज यहाँ है, यहाँ पर रोजगार देने वाले लोग भी बैठे हैं, रोजगार लेने वाले भी मौजूद हैं और रोजगारी के योग्य नौजवानों को तैयार करने वाले लोग भी मौजूद हैं और इन सारी चीजों के लिए नीति निर्धारण करने वाले लोग भी मौजूद हैं। इस सभागृह में सब प्रकार के लोग हैं। क्यों, ये हमें आदत बनानी होगी। हमारे उद्योग जगत के लोगों के साथ, हमारे technical world के साथ लगातार हमें बैठना पड़ेगा। उनसे पूछना पड़ेगा कि क्या लगता है Next ten year किस प्रकार की चीजें आप देख रहे हैं। वो कहते हैं next ten year ऐसा ऐसा आने वाला है। ऐसी ऐसी संभावना है तो हमें हमारा syllabus अभी से उसी प्रकार ऐसा बनाना चाहिए। हमारी training institution को ऊपर से तैयार करनी चाहिए तो यहाँ हमारा training के institutions से लोग बाहर निकले और वहाँ पर जाते ही उनको नई technology आ गई है तो placement मिल जाएगा। तो हमने futuristic vision के साथ हमने यह सोचना होगा कि next ten year के development की design क्या है, कौन सी technology काम करने वाली है, किस प्रकार से व्यवस्था बनाने वाली है, हमारा human resource development according to that होना चाहिए। अगर हमारा human resource development according to that होता है तो मैं नहीं मानता हूँ कि बेरोजगारी का कोई कारण बनता है, उसको रोजगार मिलता है। कैसी training से कितना फर्क होता है, मैं अपने अनुभव कुछ शेयर करना चाहता हूँ। गुजरात के लोग, मैं गुजरात में था इसलिए वहाँ का उदाहरण दे रहा हूँ। सेना में बहुत कम जाते हैं। अब वो उनका development ही अलग है। लेकिन हमने सोचा है भई क्यों न हो हमारे लोग क्यों न सेना में जाएं। तो मैंने जरा पूछताछ की, कि क्या problem है भई। नहीं बोले जब physical exercise और exam होते हैं उसी में fail हो जाते हैं। तो उनको बोले वो आते हैं तो हमारा उसमें scope है, कोटा है लेकिन हमें मौका नहीं मिलता है। तो मैंने क्या किया army के कुछ retired अफसरों को बुलाया। हमने कहा भई हमारे जो tribal belt है वहाँ के नौजवानों को तुम trained करो कि exam कैसे पास करते हैं। सब हमारा मेल बैठ गया। उन्होंने training के camp लगाने शुरू किए। एक-एक महीने के camp

लगाते गए और जब भर्ती होने लगी तो करीब जो 5-7 percent लोग हमारे मुश्किल से जाते थे। 35-40 percent तक पहुंचा दिया था। training मात्र से। उनको समझाया कि भई ऐसे दौड़ते हैं, सीना ऐसे करते हैं, जरा एक-दो चीजें तुम्हें करना आ जाएगी तुम्हारी entry हो जाएगी। वो तैयार हो गए। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा नहीं है कि कोई नौजवान जाना नहीं चाहता, लेकिन कोई उसको समझाए तो। चीजें छोटी-छोटी होती हैं लेकिन बहुत बड़ा बदलाव लाती है, बहुत बड़ा बदलाव लाती है। और आज, job market एक इतना बड़ी field है, क्योंकि हर किसी को कोई न कोई सेवादार की जरूरत होती है, किसी न किसी की व्यवस्था हो जाए। मैं जब skill development के लिए मैं काफी दिमाग खपाता रहता था क्योंकि मुझे लगता है कि ये और आज से नहीं मैं कई वर्षों से इसमें जरा रुचि लेता था। मैंने बहुत साल पहले ये सबरवाल जी को अपने यहां भाषण के लिए बुलाया था। जब मैंने सुना कि ये job market में काफी काम कर रहे हैं तो मैंने कहा कि भई बताओ तुम क्या-क्या सोचते हो। बहुत साल पहले की बात है। कहने का तात्पर्य यह है कि मुझे पता लग रहा था कि इसका एक अलग महत्व है। इस महत्व को हमें अनुभव करना चाहिए। एक बार मैंने बहुत छोटी उम्र में दादा धर्माधिकारी को मैं पढ़ता रहता था। आचार्य विनोबा भावे के साथी थे। Gandhian थे और बड़े ही समर्पित Gandhian थे। चिंतक थे। एक बढ़िया उन्होंने अपना एक प्रसंग लिखा है। कोई नौजवान उनके पास गया कि दादा कहीं नौकरी मिल जाए, काम मिल जाए तो उन्होंने पूछा कि तुम्हें क्या आता है, बोले कि मैं graduate हूं। तो कहा कि अरे भई मैं तुझे पूछ रहा हूं कि क्या आता है, अरे बोला मैं graduate हूं। अरे भई तुम graduate हो मैंने सुन लिया, मुझे समझ आ गया, तुम्हें आता क्या है। नहीं बोले कि मैं graduate हूं। मुझे कुछ काम तो मिले। चल अरे भई तुझे driving आता है क्या, तुम्हें बर्तन साफ करना आता है, तुम्हें रोटी पकाना आता है क्या, कपड़े धोना आता है। क्या आता है बताओ न। अरे मैं तो केवल graduate हूं। दादा धर्माधिकारी ने बढ़िया ढंग से एक चीज को लिखा है, अपने स्वानुभवों से लिखा है और इसलिए आवश्यक है कि उसको जीवन जीने का भी कौशल्य इस हस्त कौशल्य से आता है। जो हाथ से वो कला सीखता है जो ताकत आती है उससे जीवन जीवन्मय का कौशल्य प्राप्त होता है और उसको प्राप्त कराने की दिशा में हमारा एक प्रयास है। हम उसे entrepreneur भी बनाना चाहते हैं।

अब आप देखिए tourism हमारे देश में develop कर रहा है। जो स्थान tourist destination है, वहां tourist guide तैयार करने की कोई institute है क्या, नहीं है। वहां पर language courses है क्या। अगर आगरा है, tourist destination है तो आगरा के अंदर language courses सबसे ज्यादा क्यों नहीं होने चाहिए। ताकि वहां पर उनके बच्चों को सहज रूप से लैंग्वेज आती हो, tourist को लगेगा अपनापन, उसकी भाषा में बात करेगा। ये अगर हमें tourism develop करना है तो हमें हमारे वहां के driver को manners सिखाने से लेकर के language से communicate करने वाले लोगों तक की एक सहज समाज में फौज खड़ी करनी पड़ती है, जिनकी रोजी-रोटी भी उसी से चलती है। हमें जब तक इस प्रकार का टारगेटिड और जो कि देश की ताकत को बढ़ाता है, service sector में भी हम specific चीजों को करें तो बदलाव आता है। आज देश में tourism को बढ़ावा देने के लिए बहुत बड़ी ताकत है, बहुत बड़ी ताकत है। लेकिन उस प्रकार से जो human resource तैयार करने चाहिए, वो human resource करने के लिए हम उतने उदासीन होते हैं। मैं तो इस मत का हूं कि जो-जो tourist destination हो वहां पर हमेशा competition होते रहने चाहिए guide के। who is the best guide। कौन उस शहर का बढ़िया से बढ़िया वर्णन करता है। Competition हो, ईनाम देते रहो, आपको बढ़िया से बढ़िया, आपको ढेर सारे नौजवान मिलते रहेंगे जो history बताएंगे, archaeology बताएंगे, architecture बताएंगे, व्यक्तियों के नाम बताएंगे। सब पचासों सवालों के जवाब दे पाएंगे। धीरे-धीरे potential खड़ा हो जाएगा। कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि हमारे यहां संभावनाएं बहुत हैं, मुझे जब मैं skill में काम करता था, मैंने क्या किया, हमारे यहां अफसर लोग आए हुए थे। चल रहा था, कैसे करना है, मैंने कहा कि एक काम करो भई, गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक, जीवन में कितनी चीजों की आवश्यकता होती है, उसकी एक सूची बना लो और जो सूची बनेगी, उतनी skill चाहिए। तो उन अफसरों ने कहा अब हम सोचते हैं। उन्होंने सरसरी नज़र में दो-तीन दिन बैठे बनाए तो कोई nine hundred and twenty six चीजें लेकर के आए। कि वो जन्म के बाद उसको ये चाहिए, पढ़ाई के समय ये लगेगा, शादी के समय गुलदस्ता लगेगा। सारी चीजों की लिस्ट बनाई। कोई nine hundred and twenty six चीजें ऐसे ही सरसरी, वैसे बनाई जाए तो शायद दो हजार निकलेंगी। मैंने कहा कि इन nine hundred and twenty six का skill development है क्या तुम्हारे पास। लोगों को जरूरत है। ये हमने सोचना होगा। अगर भई गुलदस्ते की जरूरत है तो गुलदस्ता देना और value addition कैसे होता है, मैं हैरान था, मैं कोई अगर technology नई आए तो देखने का ज़रा शौकीन हूं।

एक बार मैं एक tribal belt में गया। तो वहां मुझे, वहां के आदिवासी बच्चियों ने एक गुलदस्ता दिया और मैं हैरान था कि उस गुलदस्ते के हर फूल पर मेरी तस्वीर लगाई हुई थी। मेरे लिए वो surprise था। मुझे लगा कि उन्होंने चिपकाया होगा। तो मैंने ज़रा यूं करके देखा तो ऐसा तो नहीं लगा। तो मैंने फिर उनको वापिस बुलाया। मैंने कहा कि ये क्या है, ये tribal बच्चियों की मैं बात कर रहा हूं। बोले, हमने गुलाब की पत्तियों पर laser technique से आपकी फोटो छापी है। अब आप बताइए value addition करने की क्या सोच होती है। एक आदिवासी इलाके की गरीब स्कूल की बच्ची को भी ये दिमाग में आता है कि टेक्नोलॉजी का कैसे उपयोग होता है। मतलब work dynamics बदल रहे हैं। हम उसके लिए सज्ज कैसे करें। मुझे तो लगता है कि कोई ये चलाए न कि भई एक घंटे का training, board लगाकर बैठ जाए। क्या, mobile

phone कैसे उपयोग किया जाए, मैं सिखाऊंगा। मैं बताता हूं साहब लोग लग के queue में खड़े हो जाएंगे। बहुत लोग हैं जो ये तो दूँदते रहते हैं कि नया model कौन सा आया है। लेकिन उनको ये पता नहीं होता है कि ये green या red button के सिवाए इसका क्या उपयोग होता है। अब किसी के दिमाग में है हां भई मैं ये करूंगा, आप देखिए लोग जाएंगे कि अच्छा भई मैं नया लाया हूं अच्छा बता कैसे operate करेंगे, क्या-क्या चीजें होती हैं। सीखने के लिए लोग जाएंगे, उपयोग करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें ये जोड़ना है, हमें कौशल्य के साथ जीवन जीने की क्षमता, कौशल्य के साथ रोजगार के अवसर, कौशल्य के साथ विश्व के अंदर भारत का डंका बजाने का प्रयास। इस लक्ष्य को लेकर हम इस काम को लेकर के चल रहे हैं मैं राजीव प्रताप रूडी और उनकी पूरी टीम का बधाई देता हूं जिस प्रकार से इस कार्यक्रम की रचना की है। जिस प्रकार से इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया है। और उसमें देखिए innovation कैसे होते हैं। मुझे बाहर, आपको भी मौका मिले तो देखिए एक बच्ची ने ये जो ship के अंदर कंटेनर होते हैं। वो जो rejected माल जो होता है container उसको लगाया है और उसने कंटेनर को ही अंदर school में convert कर दिया है। जो कि discard होने वाला था। वो टूटने के लिए जाने वाला था। देखिए कैसे लोग अपने कौशल्य का उपयोग करते हैं। किस प्रकार से चीजों में professionalism आ रहा है। हमें इन चीजों को लाना है और मैं मानता हूं कि भारत के नौजवानों के पास भरपूर क्षमताएं हैं, उसको अवसर मिलने चाहिए। वो किसी भी चुनौतियों को चुनौती देने के लिए सामर्थ्यवान होता है और अब भारत जो कि demographic dividend के लिए गर्व करता है उस demographic dividend की गारंटी skill में है, trained man power में है और उस trained man power schools पर बल देकर के हम आगे बढ़ें, यही मेरी शुभकामनाएं हैं और इन नौजवान बच्चों को जिन्होंने दुनिया में हमारा नाम रोशन किया है। वे अब जा रहे हैं। World Competition में, हम उनको बहुत-बहुत शुभकामनाएं दें।

मैं आशा करता हूं कि हम दुनिया में इस क्षेत्र में हमारी पहचान बनाएं कि हां भई हमारे नौजवानों में कौशल्य के अंदर और ये Olympic से कम नहीं होता इनका ये game, इनका ये कौशल्य दिखाना। बड़ा महत्वपूर्ण होता है। हमारे देश में अभी ध्यान नहीं गया क्योंकि वो नहीं है, glamour नहीं है। लेकिन धीरे-धीरे आ जाएगा। आज शुरू किया है मैंने। धीरे-धीरे दुनिया का ध्यान जाएगा।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

अमित कुमार/ हिमांशु सिंह/ हरीश जैन/ मनीषा/ निर्मल

पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय

07-अगस्त-2015 17:59 IST

---

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

वणक्कम्,

बुनकर भाईयों और बहनों, पुरस्कार विजेताओं, देवियों और सज्जनों

**तमील नाट्टुक्कु वन्ददिल् ॥ मीक्क मगील्ची ।**

**नेशवालअ अन्बरगलै ॥ काण्बदिल् ॥ मेलूम मगील्ची**

सबसे पहले तमिलनाडु की मुख्यमंत्री आदरणीय डॉक्टर जे. जयललिता जी का, Tamil Nadu Government का और तमिलनाडु के नागरिकों का हृदय से अभिनंदन करता हूँ कि आपने एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम को एक host के रूप में तमिलनाडु में मनाया। आज राष्ट्रीय Hand-loom Day का प्रारंभ हो रहा है और तमिलनाडु से हो रहा है सामान्य रूप से सरकार को सब चीज दिल्ली में करने की आदत है, लेकिन मेरी कोशिश है कि सरकार दिल्ली से बाहर निकले और आज पूरी दिल्ली सरकार तमिलनाडु में मौजूद है।

I congratulate you and extend my best wishes on the occasion of the first National Hand-loom Day.

The Swadeshi movement was launched on 7th August, 1905. It is remembered as one of the major events of our freedom struggle. It was on this day that Indians started to boycott imported textiles. Therefore this day has a special significance for hand-looms. Hence we have chosen this day to be celebrated as National Hand-looms day.

आजादी का जंग जब चल रहा था, उस समय गुलामी से मुक्ति के लिए hand-loom एक हथियार था। आज आजाद भारत में गरीबी से मुक्ति के लिए hand-loom एक हथियार बन सकता है।

India is home to several world famous hand-loom products. To name a few we have Kanchivaram (कांजीवरम) of Tamil Nadu, Baluchari and Jamdani (बालुचारी and जामदानी) of West Bengal, Chanderi and Maheswari (चंदेरी and महेश्वरी) of Madhya Pradesh, Muga (मूगा) of Assam, Patola (पटोला) of Gujarat, Kani and Shehtoosh (कानी and शहतूश) of Jammu and Kashmir and Pochampally (पोचमपल्ली) of Andhra Pradesh. The hand-loom sector has inherent strengths that we need to market.

Hand-loom mainly uses natural fiber like cotton, silk, wool, jute etc. Therefore it is Eco-friendly. We can make it even more Eco-friendly by using vegetable dyes and other organic products.

Today people are very conscious of the environment and holistic healthcare. We need to exploit this in marketing hand-loom products both domestically and for exports. On 2nd October last year, I had asked people to use one item of Khadi to brighten the lives of artisans. I am informed that since then sale of Khadi has gone up by 60% as compared to the same period last year. मैंने पिछली बार, दिवाली से पहले मन की बात में लोगों से प्रार्थना की थी कि आप घर में पच्चीसों प्रकार की fabric रखते हैं। कोई रिश्तेदार आए तो बताते हैं कि मेरे पास ये है, ये है, ये है लेकिन एक खादी नहीं होता है। कम से कम घर में एकाध-एकाध चीज खादी की रखा करिए। इतनी से मेरी request को देशवासियों ने मान लिया और 60 प्रतिशत बिक्री बढ़ गई, गरीब के घर में दीया जला।

We now also need to give a similar call for hand-looms. Can we not enhance use of hand-looms in our daily lives? We have many options such as clothes curtains bed sheets table covers door mats and rugs just to name a few. This will not only support hand-looms but will also support our weavers.

I am told that hand-looms form 15% of total cloth consumption. If we raise this to just 20%, from 15% to 20%, it will give a huge boost to hand-looms. Hand-loom turnover will increase by 33%.

People, especially women, wear hand-loom clothes on social occasions like marriages and major festivals. We need to popularize this among our youth. This will give the much-needed boost to the hand-loom sector.

मुझे कभी-कभी लगता है कि हम कभी Five Star Hotel में खाएं, Seven Star Hotel में खाना खाएं, लेकिन जब घर में मां के

हाथ का खाना मिलता है तो उसका आनंद कुछ और होता है, एक अलग संतोष होता है, क्यों? क्योंकि मां जब खिलाती है, तब सिर्फ खाना नहीं खिलाती है, उसमें भरपूर प्यार भी मिला हुआ होता है और इसके कारण हमें संतोष भी उतना ही मिलता है। मैं कभी-कभी जब खादी या हैंडलूम पर सोचता हूं तो मुझे लगता है कि दुनिया की चाहे कितनी ही variety क्यों न पहन लें, लेकिन जब हैंडलूम या खादी की चीज लगती है, तो ऐसा ही लगता है, जैसे मां ने परोसा है, प्यार से परोसा है, प्यार से बनाया है। ये जो फर्क है, ये जो फर्क हम महसूस करेंगे तब हमें पता चलेगा कि ये कितनी प्यार से बनाई हुई चीज, मेरे शरीर पर मैंने धारण की है।

किसी बुनकर परिवार में हम जाएं, हम देखेंगे कि पूरे घर में 80% जगह, 80% place वो लूम के लिए देते हैं और 20% place में पूरा परिवार गुजारा करता है और जब एक साड़ी लूम की बनती हुई होती है, पांच महीने-छह महीने, एक-एक ताना-बाना का काम होता है, पूरा परिवार उस साड़ी को ऐसे बनाता है जैसे मां अपनी बेटी को बड़ा बना रही हो, जैसे अपनी बेटी का लालन-पालन करती हो, उस रूप में परिवार के अंदर पूरा परिवार, उस साड़ी को बुनता है और जब वो साड़ी घर से विदाई होकर के किसी दुल्हन के शरीर पर जाने वाली होती है, उस परिवार को भी उतनी ही आनंद होता है और वैसे ही उस साड़ी की विदाई करते हैं, जैसे मां-बाप अपनी लाडली की विदाई करते हैं। इतना प्यार उस बुनकर को उन कपड़ों को बुनते-बुनते हो जाता है।

..और बुनकर परिवार जो साड़ी बनाता है उसका इतना लगाव होता है कि 15-20 साल के बाद कोई मिल जाए और पता चले कि उसने वो साड़ी पहनी है, जो उन्होंने बनाई थी, उसे देखकर के उतना उनका मन भर आता है जैसे अपने परिवार का स्वजन मिला हो, इतना लगाव बुनकर को एक ताने और बाने के साथ होता है।

We need to take several initiatives to make hand-loom fashionable. This can be done by bringing new designs and colour schemes, constantly evolving and innovating, ensuring quality. Fashion and design education in India also needs to be re-oriented. We need to make our hand-loom tradition the centerpiece of fashion for India and the world.

We are committed to give a rightful place to our famous traditional hand-loom products. India Hand-loom Brand has been launched with the sole objective of winning the trust and confidence of customers.

मुझे अभी किसी ने एक किताब दी थी। उस किताब में, दुनिया में हैंडलूम के भिन्न-भिन्न प्रकार, handicraft के भिन्न-भिन्न प्रकार के, किस शताब्दी में क्या-क्या काम होता है। दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों के.. उन्होंने बड़ी ही एक tree बनाया है। कोई 1500 साल पुरानी चीजें थीं उसमें, कोई 1400 साल थी, कोई 1000 साल थी, कोई 200 साल थी। मैं हैरान था छोटे-छोटे देशों का भी उसमें नाम था, लेकिन पूरी उस tree में handicraft और hand-loom की दुनिया में हिन्दुस्तान का नामो-निशान नहीं था। I was shocked, एक उनकी अज्ञानता के ऊपर और दूसरा हम लोगों ने कभी हमारी बातों को branding नहीं किया। दुनिया को पता तक नहीं कि एक जमाना था कि हमारे देश के बुनकरों और कारीगरों से बनाई हुई चीजें, दुनिया के पांचों खंडों में चाहे अफ्रीका हो, यूरोप हो, चाहे अरब राष्ट्र हो, चाहे China हो सब दूर हमारी चीजें बिकती थीं और उसको लेने के लिए दुनिया लालायित रहती थी। लेकिन आज जो लोग किताबें लिखते हैं उनको पता तक नहीं है कि हमारा कभी इतना भव्य इतिहास रहा है क्योंकि हमने हमारी चीजों का जो global branding करना चाहिए, global marketing करना चाहिए उसमें कहीं न कहीं हम कम पड़े हैं।

कभी-कभी हम लोग सोचते हैं कि इस काम को कैसे बढ़ाया जाए। छोटे-छोटे प्रयास भी भी हमें बहुत बड़ा परिवर्तन देते हैं। जैसे The film industry has a major role in popularizing fashion in India. And of course I know that Chennai is a big center of the film industry. Can our film makers decide that at least one out of five films will only use hand-loom, handicrafts and khadi?

हमारे फिल्म इंडस्ट्री वाले अपनी फिल्म को popular करने के लिए कुछ दृश्यों के विषयों में बताते हैं कि ये वहां का दृश्य है, ये ठिकना का shooting है तो automatic उनको देखने वाले मिल जाते हैं। अगर वे तय करें कि भई मैं पांच फिल्मों से एक फिल्म ऐसी बनाऊंगा, जिसमें हर कोई हैंडलूम का ही उपयोग होगा, सबके कपड़े भी हैंडलूम के होंगे, handicraft का उपयोग होगा, सारी चीजें ऐसी होगी। मैं उनको विश्वास दिलाता हूं, देश के करोड़ों बुनकर, करोड़ों कारीगर उनकी फिल्म देखने के लिए

जरूर जाएंगे, अपने आप उनको मार्केट मिल जाएगा।

आज के मैनेजमेंट गुरु जब industrial development की बात करते हैं तो cluster concept की बात करते हैं तो cluster को promote करने की बात करते हैं। हमारे पूर्वजों ने सदियों पहले अगर हम सिर्फ hand-loom और handicraft को देखें तो हमें पता चलेगा कि कैसे cluster से हमारे यहां काम होता था। अब देखिए उत्तर प्रदेश जाइए तो बनारस hand-loom का एक बहुत बड़ा cluster बना हुआ है। अगर आप यहां कांचीपुरम जाइए, आपको handloom का बहुत बड़ा cluster बना हुआ आपको दिखाई देगा, आप देवगिरी जाइए, महाराष्ट्र में आपको बहुत बड़ा हैंडलूम का cluster बना हुआ दिखाई देगा यानि उस समय भी चाहे supply chain की बात हो, चाहे marketing की बात हो, चाहे cluster development की बात हो, चाहे raw material supply की बात हो। आज के जितने भी मैनेजमेंट गुरु जो बातें बताते हैं वो सदियों से handloom-handicraft की दुनिया में हमारे पूर्वजों ने develop किया हुआ था।

Recently, we have launched the “Digital India Movement”, which will soon connect all Indians through the Internet. Young consumers are now buying extensively through e-commerce platforms. Therefore we should enlarge the scope of e-commerce for sale of hand-loom products.

As we develop markets for hand-looms we also need to extend support to our weavers on the production side. I am happy to learn that the National Hand-loom Development Corporation supplied 27% more yarn during 2014-15 as compared to the previous year.

Assistance to individual weavers for building work sheds and purchasing loom and accessories will now be directly transferred to their bank accounts. We have taken a major step for developing hand-loom clusters at the block level. Earlier, assistance of only about 60 lakhs rupees was being given for one hand-loom cluster. This has now been increased up to 2 crore rupees.

पहले बिचौलिये और दलालों की दुनिया चलती थी। अब सीधा बैंक अकाउंट में weaver के पास पैसा पहुंचेगा। दूसरा, पहले जो shed के लिए आपको सात लाख रुपया दिया जाता था, अब दो करोड़ रुपया दिया जाएगा।

The main objective of all our efforts is to increase wages of our weavers. Weaving is a very laborious job. In some cases, a weaver takes months to weave a single saree. We need to put in place systems that will ensure that they are paid their rightful wages. We also need to improve technology to enhance productivity and reduce labour in the pre-loom activity.

This will help enhance income levels. Apart from increasing incomes our Government is also committed to extend robust social security cover to weaver families.

We have launched a national drive for financial inclusion through Jan Dhan Yojana. Recently we have also launched three new social security schemes intended to benefit unorganized sectors.

The Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Beema Yojana will provide life insurance. The Pradhan Mantri Suraksha Beema Yojana will give you accident insurance cover. The Atal Pension Yojana will give you a pension from the age of 60. You can protect your future by paying a small amount every month.

I call upon all of you to join these schemes and also ask your friends and relatives to do so.

To address financing problems of Micro, Small & Medium Industries the Government has announced the creation of a MUDRA Bank. This bank has a corpus of Rs. 20,000 crores and a credit guarantee corpus of Rs. 3,000 crores. MUDRA Bank would ensure that at least 60% of the credit flows to loans of less than Rs. 50,000.

I am sure this initiative will benefit hand-loom weavers in a big way.

I congratulate all those who are being awarded today. Their expertise should be utilized for skill development programmes, as well as for production of master pieces for display.

Innovative design backed by good marketing is essential for promotion of hand-looms. In this context I would like the request to the Textile Ministry to consider holding competitions and giving awards for design creation and marketing of hand-loom products.

National Hand-loom Day celebrations should not end with just a ceremony today. We have to make this a continuous movement. A movement to popularize Hand-loom and to improve the lives of our weavers.

एक प्रकार से बुनकर परिवार से जुड़े लोग उनका पूरा हिसाब-किताब ताने-बाने के साथ जुड़ा हुआ है। सारा खेल ताना और बाना से बना हुआ है।

अब समय की मांग है कि हम एक नये सिरे से इस चीज का आगे बढ़ाए। हमारे पास जो परंपरागत कला है उस ताने को आधुनिक बाने के साथ कैसे जोड़े?

Hand-loom में ज्यादातर महिलाएं हैं। Hand-loom गांवों में है। समय की मांग है कि गांव का ताना global बाने के साथ कैसे जुड़े और गांव का ताना और global बाने का मिलन कैसे हम?

समय की मांग है कि गरीबी का ताना और अमीरी का बाना दोनों को जोड़ करके हम आर्थिक समृद्धि की दिशा में hand-loom को आगे बढ़ाए। उत्तर-दक्षिण का ताना और पूरब-पश्चिम का बाना भारत के कोने-कोने में पड़ी इस कला को एक दूसरे से परिचित करा करके एक महाशक्ति के रूप में hand-loom को कैसे उभारे?

गांव का un-skill से ले करके दुनिया के हर high-skill के साथ एक तरफ un-skill का ताना, तो दूसरी तरफ high skill का बाना। इस ताने और बाने के मिलन से हम hand-loom के उद्योग को नई ऊंचाईयों पर कैसे ले जाए।

Zero defect का ताना, Zero effect का बाना और हम हमारा ऐसा product करे जो दुनिया को भा जाए और जो environment के लिए सहायक हो, उपकारक हो, environment friendly हो।

मैं फिर एक बार आज सम्मान प्राप्त करने वाले सभी हमारे कारीगर भाईयों-बहनों का सम्मान करता हूं, अभिनंदन करता हूं और तमिलनाडु की सरकार का, नागरिकों का हृदय से अभिनंदन करता हूं। बहुत बहुत धन्यवाद।

\*\*\*

अतुल कुमार तिवारी / अमित कुमार / मुस्तकीम खान / तारा – 3973



